

# प्रोजेक्ट कार्य के माध्यम से सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा

चिक्कावीरेश एस वी

**ब**च्चों का सीखना उनकी भावनाओं से जुड़ा होता है। हम इन दोनों चीजों को अलग करके नहीं देख सकते। बच्चे तभी प्रभावी और स्थायी ढंग से सीख सकते हैं जब सीखना उनकी भावनाओं से जुड़ा हो। करीब दो सालों से कोविड-19 महामारी के कारण स्कूलों के बन्द होने से न सिर्फ बच्चों की स्कूली शिक्षा में बल्कि उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी रुकावट पैदा हुई है। इसलिए बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के सामाजिक और भावनात्मक आयामों पर जोर देना पहले की तुलना में अब कहीं ज्यादा जरूरी हो गया है। सीखने के इस पहलू को गतिविधियों और कक्षा प्रक्रिया का हिस्सा बनना चाहिए।

बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को सीखने की अवधारणाओं और नतीजों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसे बढ़ावा देने के लिए कई शैक्षणिक तरीके अपनाए जा सकते हैं। इनमें खास हैं - खेल, नाटक, कला, समूह गतिविधि, सहमति-असहमति की गुंजाइश वाली गतिविधियाँ, जोर से पढ़ना, सक्रिय रूप से सुनना, खुली चर्चा और स्वतंत्र लेखन। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। यहाँ मैं इस तरह की एक कोशिश के अपने अनुभव और इससे बनी समझ को साझा करने जा रहा हूँ। इसके बाद मेरे द्वारा बच्चों को सौंपे गए प्रोजेक्ट में शामिल प्रक्रियाओं और उन तरीकों के बारे में बताया गया है जिनसे इस प्रोजेक्ट ने बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने में मदद की।

## योजना मेले का अनुभव

हमने एक 'योजना मेले' पर विचार किया। शुरुआत में हमने शिक्षकों के साथ उन प्रोजेक्टों पर चर्चा की जिनके लिए बच्चे खुद से जानकारी या आँकड़े जुटा सकते थे। जो विषय हमारे पास आए, उनमें से हमने गाँवों में पानी के स्रोतों का विषय चुनने का फैसला किया। इस विषय को हमने इसलिए चुना क्योंकि जीवन को बनाए रखने के अलावा, पानी सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक क्षेत्रों में भी महत्व रखता है। बच्चों को अपने गाँव में इस विषय से जुड़ी जानकारी जुटानी थी।

हमने कक्षा 5-6 और 7 के 30 विद्यार्थियों के साथ प्रोजेक्ट की शुरुआत एक अनूठे तरीके से की। हमने उन्हें राजस्थान में पानी

की कमी से सम्बन्धित एक डॉक्यूमेंट्री *वॉटर वाइज़* का प्रदर्शन किया। इसके प्रदर्शन के पहले पानी की कमी की भयावहता और जल संरक्षण के महत्त्व पर चर्चा की गई थी।

बच्चों से कहा गया कि वे अपने गाँवों में पानी के स्रोतों की पहचान करें। ये बच्चे जम्बालादिन्नी, हिरेहुनाकुंती और तारीवाला नाम के तीन अलग-अलग गाँवों से थे और उनके अनुभव भी अलग-अलग थे। फिर हमने बच्चों को 10 समूहों में बाँट दिया और हर एक समूह को एक प्रोजेक्ट दिया। प्रोजेक्ट कार्य के विषय इस तरह थे :

1. जम्बालादिन्नी के विद्यार्थियों को : 20 साल पहले आपके गाँव में मौजूद जल स्रोत।
2. हिरेहुनाकुंती के विद्यार्थियों को : 20 साल पहले आपके गाँव में मौजूद जल स्रोत।
3. तारीवाला के विद्यार्थियों को : 20 साल पहले आपके गाँव में मौजूद जल स्रोत।
4. इन तीन गाँवों में पानी के मौजूदा स्रोत।
5. आपके गाँव में पानी का दुरुपयोग।
6. एक दिन, एक महीने और एक साल के दरमियान एक परिवार द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पेयजल की मात्रा; पानी बचाने के सम्भावित तरीके और बचाई जा सकने वाली मात्रा।
7. पानी के मुद्दे पर अखबारों में प्रकाशित लेख और उनमें व्यक्त विचार।
8. शौचालय और उनमें पानी का इस्तेमाल।
9. कृषि और सिंचाई में पानी का इस्तेमाल।
10. आपके गाँव में वर्षा जल संचयन के लिए उठाए गए कदम।

पानी के मुद्दों से हुए इस परिचय के एक महीने के भीतर बच्चों ने अपने माता-पिता, बुजुर्गों, गाँव के नेताओं और ग्राम पंचायत के सदस्यों के साथ चर्चाओं के आधार पर अपनी रिपोर्टें तैयार कीं। हमने इन रिपोर्टों पर अलग-अलग कक्षाओं के बच्चों के विभिन्न समूहों के साथ कई बार चर्चा की और उन्हें अपनी रिपोर्टों को और बेहतर बनाने के लिए सुझाव दिए। बच्चों ने जानकारी इकट्ठी करने और रिपोर्टों पर चर्चा करने में काफ़ी उत्साह दिखाया।

मेले का दिन तय किया गया और सभी विद्यार्थियों द्वारा समूह रिपोर्ट प्रस्तुत करने का कार्यक्रम तय कर दिया गया। इसमें ग्रामीणों को भी बुलाया गया था। इस बार विद्यार्थियों का एक साथ इकट्ठा होना कई कारणों से हर बार से थोड़ा अलग था। बैठक में साझा की गई जानकारी को विद्यार्थियों ने खुद जुटाया था। उनका ज्ञान उनके अपने अनुभव का एक हिस्सा था। इसलिए उनके प्रस्तुतीकरण और चर्चा के दौरान उनमें एक आत्मविश्वास नज़र आ रहा था। अन्य बातों के अलावा, बच्चों ने जल संरक्षण की समस्याओं पर चर्चा की और इस महत्वपूर्ण संसाधन के समुचित उपयोग के लिए अहम सुझाव दिए। बच्चों से इस तरह की बातें सुनकर गाँव वाले भी खुश और प्रभावित हुए क्योंकि बहुत-सी बातें वे खुद भी नहीं जानते थे। बातचीत को और सार्थक बनाने के लिए उन्होंने भी अपने विचार सामने रखे।

बच्चों को यह प्रोजेक्ट देते समय हमें थोड़ी हिचकिचाहट हुई थी। इस तरह के काम को करने में उनकी क्षमता को लेकर हमें थोड़ी शंका थी। लेकिन जिस उत्साह के साथ उन्होंने जानकारी और आँकड़ों को इकट्ठा किया और अपने विचार प्रस्तुत किए, उससे हमें उन पर गर्व महसूस हुआ। इस अनुभव ने हमें सिखाया कि विद्यार्थी जो सीखते हैं उसमें उन्हें शामिल करना कितना प्रभावी होता है, साथ ही हमने अपने शिक्षण में सीखने के विद्यार्थी-केन्द्रित तरीकों को शामिल करने के महत्त्व को भी जाना। जो शिक्षक इस प्रोजेक्ट में विद्यार्थियों की भागीदारी देख चुके थे, वे अब विद्यार्थियों से सक्रिय भागीदारी पाने के लिए सिखाने की इस पद्धति को अहमियत दे रहे हैं।

इस लेख को लिखने से ठीक पहले, मैंने विद्यार्थियों से बातचीत की और यह जानने की कोशिश की कि उन्होंने प्रोजेक्ट से क्या सीखा। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि विद्यार्थी सीखी हुई बातों को कई महीनों के बाद भी भूलें नहीं थे। जब उनसे पूछा गया कि उन्हें ब्यौरे इतनी अच्छी तरह कैसे याद रहे तो उनका जवाब था, “जो हमने खुद किया था, उसे हम कैसे भूल सकते हैं सर?” विद्यार्थियों के अनुभव, शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं और इस प्रोजेक्ट से मिली समझ ने मुझे यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि बच्चों की सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा को आसान बनाने के लिए प्रोजेक्ट-आधारित पद्धति एक बेहतरीन साधन हो सकती है।

## योजना मेले में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा के लिए गुंजाइश

### विद्यार्थियों की बैठकें

प्रोजेक्ट कार्य सौंपने, जिम्मेदारियों को बाँटने और इकट्ठा किए गए आँकड़ों और जानकारी पर चर्चा करने के लिए विद्यार्थियों की बैठकें अक्सर आयोजित की जाती थीं। इन बैठकों से

विद्यार्थियों को बिना किसी हिचकिचाहट के अपने विचार खुलकर व्यक्त करने के लिए एक मंच मिला और नतीजतन उन्हें दूसरों के द्वारा सही या ग़लत ठहराए जाने के डर से छुटकारा मिला। इससे उन्हें खुद को अभिव्यक्त करने, अगुआई करने, निर्णय लेने, आत्मविश्वास जगाने, समस्याओं के हल खोजने और किसी उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध होने की क्षमताएँ विकसित करने में मदद मिली।

### सामूहिक कार्य

बच्चे पाँच से छह के समूह में काम करते थे। हर एक समूह में सीखने की अलग-अलग क्षमताओं वाले बच्चे थे, लेकिन उन्होंने सहयोग, भागीदारी और जिम्मेदारी की भावना से काम किया। यह ऐसा मंच था जहाँ वे एक-दूसरे से सीखने के सिद्धान्त का अभ्यास कर सकते थे। कक्षा-7 के बच्चों ने कक्षा-5 और 6 के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। जूनियर विद्यार्थियों को अपने सीनियरों के साथ बातचीत करने में मज़ा आया। अपनी ‘कक्षाओं के अवरोधों’ को पार करते हुए, अन्य कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ घुलना-मिलना और सीखना सभी के लिए बहुत बढ़िया अनुभव रहा। वे समूहों में काम करने और अपने समूह को सफल होते हुए देखने के लिए उत्साहित थे। उनका उत्साह मेरी स्मृति में आज भी दर्ज है।

### स्वतंत्र लेखन

बच्चों को यह लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया कि उन्होंने दूसरों के साथ क्या चर्चा की और खुद क्या देखा। इससे उन्हें खुद को, यानी अपने विचारों, भावनाओं और समझ को व्यक्त करने का मौक़ा मिला और उनके लिए यह खुद को सहज बनाने और समृद्ध करने वाला अनुभव था।

### ज़ोर से पढ़ना

बच्चों ने जो बातें अपने समूहों में और दूसरे समूहों के साथ बैठकों में लिखी थीं, उन्हें ज़ोर से पढ़ने के लिए कहा गया। इससे उन्हें न केवल आत्मविश्वास से पढ़ने का मौक़ा मिला बल्कि दूसरों को सुनने और संवेदनशील होकर दूसरों के विचारों, भावनाओं और नज़रियों को समझने का मौक़ा भी मिला।

### समुदाय के साथ सहभागिता

पानी से जुड़े मुद्दों (लोगों के पास क्या सुविधाएँ हैं और वे किन समस्याओं का सामना करते हैं, आदि) को लेकर समुदाय के अनुभव के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए समुदाय के साथ की गई बातचीत ने बच्चों को जल संकट के मुद्दे के प्रति संवेदनशील बनाया और उनके भीतर उनके आस-पास की दुनिया के बारे में जागरूकता विकसित करने में मदद की। समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करने से बच्चों को

उनके साथ सामाजिक सम्बन्ध विकसित करने में मदद मिली। उन्होंने सक्रिय रूप से सुनने, सहयोग और परस्पर मदद करने की अहमियत को भी महसूस किया।

*काम को समय पर पूरा करने के लिए सराहना*

दिए गए कामों को पूरा करने के लिए बच्चों को एक समय सीमा दी गई और उन्हें समय पर पूरा करने के लिए उनकी सराहना भी की गई। उन्हें अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करने और सुधार के बारे में सोचने के लिए कहा गया। फिर उन्हें धीरे-धीरे ज्यादा जटिल काम दिए गए और उनको पूरा करने में उन्हें मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और सहयोग दिया गया। लक्ष्य तय करने, अपने प्रदर्शन में सुधार करने और फिर ज्यादा बड़ा लक्ष्य तय करने की उपलब्धि से उन्हें आत्मविश्वास और स्थिरता मिली। खुद को मिली सराहना से वे और बेहतर करने के लिए प्रेरित हुए।

*प्रस्तुतीकरण के कौशल*

प्रोजेक्ट पूरा करने के बाद उनसे कहा गया कि वे अपनी पूरी की गई गतिविधि पर पोस्टर तैयार करें और दर्शकों के सामने प्रदर्शित करें। दर्शकों के सवाल को ध्यान से सुनने, उनका धैर्य के साथ जवाब देने और सही आलोचना को स्वीकार करने से उनके प्रस्तुतीकरण के कौशलों में और ज्यादा निखार आया।

## पानी और मानवीय मूल्य

जैसा कि पहले भी बताया गया, पानी से जुड़े अलग-अलग पहलुओं पर चर्चाएँ हुईं, जैसे इसके स्रोत, उपयोग और दुरुपयोग; एक दिन, महीने और साल में किसी घर और गाँव में इस्तेमाल किए जाने वाले पानी की मात्रा; शौचालयों में

इस्तेमाल किया जाने वाला पानी; और जल संरक्षण की सम्भावनाएँ। इन चर्चाओं के जरिए बच्चों को जीवन के लिए पानी के महत्त्व को लेकर जागरूक बनने और पानी से जुड़े मानवीय मूल्यों की सराहना करने में मदद मिली। कई मुद्दों को लेकर उनकी समझ में सुधार हुआ, जो इस प्रकार हैं :

- सभी जीवित प्राणियों के बीच सम्बन्ध और पानी पर उनकी निर्भरता।
- साफ़-सफ़ाई और स्वच्छता के बारे में सीखने की जरूरत।
- पानी से सम्बन्धित स्वच्छता, जल स्रोतों और जल वितरण प्रणालियों के बारे में जागरूकता का महत्त्व।
- जल वितरण का लोकतंत्रीकरण करना ताकि सभी वर्गों के लोग समान रूप से पानी का इस्तेमाल कर सकें और पानी के स्रोतों के इस्तेमाल में विशेषाधिकार की व्यवस्थाओं को खत्म किया जा सके।
- जल संसाधनों का सही उपयोग करना और उनके दुरुपयोग को रोकना।
- प्रकृति का संरक्षण, उसके प्रति सम्मान और पानी के सम्बन्ध में सही और गलत आचरण।
- पानी को लेकर समझदारी भरा और वैध आचरण, जैसे पानी की सुविधा का क्रानूनी रूप से इस्तेमाल करना और पानी के बिलों के भुगतान की सामाजिक ज़िम्मेदारी का सम्मान करना।

## पीछे मुड़कर देखने पर

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे एहसास होता है कि



चित्र-1 : पानी से जुड़े मुद्दों के बारे में दादी से जानकारी लेता एक विद्यार्थी।

पूरे प्रोजेक्ट में मेरी भूमिका कितनी कम थी। मेरा काम केवल कुछ प्रश्नों को तैयार करना था, जिसके आधार पर विद्यार्थी खुद पानी के स्रोतों और पानी से जुड़े अन्य मुद्दों पर आधारित इस प्रोजेक्ट पर आगे बढ़े, अहम जानकारी जुटाई और अपने निष्कर्ष सामने रखे। उन्होंने सवाल पूछने, जवाबों को इकट्ठा करने, जानकारी का विश्लेषण करने और अपने सीखे हुए को दर्शकों-श्रोताओं के सामने रखने का कौशल सीखा। विद्यार्थियों

की बैठकों और समूह कार्य में उनकी भागीदारी, स्वतंत्र लेखन की कोशिशें, ज़ोर से पढ़ना, समुदाय के साथ बातचीत और समय सीमाओं को पूरा करना सीखना, सब कुछ तारीफ़ के क़ाबिल था। प्रस्तुतीकरण और निर्णय लेने की कला सीखने के अलावा उन्होंने आत्म-जागरूकता और सामाजिक सम्बन्धों की भावना भी विकसित की। उन्होंने सोचना, अन्वेषण करना, अनुमान लगाना और विवेचना करना सीखा। इस तरह कहा



चित्र-2 : योजना मेले के दौरान विद्यार्थियों द्वारा प्रोजेक्ट का प्रस्तुतीकरण।

जा सकता है कि उनका परिचय उन कौशलों से हुआ जिन्हें सीखने के उच्च-क्रम के कौशल माना जाता है।

उनकी गतिविधियों में अंकगणित और भाषा कौशल, पर्यावरण जागरूकता शामिल थी; उनके सीखने का एक भावनात्मक और सामाजिक आयाम था और सबसे बढ़कर, इसमें पानी और पर्यावरण जागरूकता के महत्त्व पर केन्द्रित मानवीय

मूल्यों की भावना भी शामिल थी। कक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक आदर्श जगह बन गई। इस वजह से, मैं इस सामूहिक विद्यार्थी-केन्द्रित प्रोजेक्ट कार्य को इस बात का एक बड़ा उदाहरण मानता हूँ कि एक सुविचारित प्रोजेक्ट किस तरह विद्यार्थियों को सीखने के अलग-अलग पहलुओं में शामिल कर सकता है।



चिक्कावीरेश एस वी इंजीनियरिंग स्नातक हैं और आजकल कर्नाटक के बागलकोट ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में गणित और विज्ञान के लिए रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने स्कूलों में गणित सीखने में सुधार करने के लिए संसाधन निर्मित करने में 'कालिका चेतारिके' रिसोर्स टीम के साथ काम किया है। उन्हें पढ़ना, लिखना और स्कूली शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए काम करना पसन्द है। उनसे [chikkaveeresh.v@azimpremjifoundation.org](mailto:chikkaveeresh.v@azimpremjifoundation.org) पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमेय कान्त पुनरीक्षण : भरत त्रिपाठी कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय